International Journal of Academic Research
This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License [CC BY 4.0]
P-ISSN: 2348-7666: Impact Factor: 7.215
Homepage: https://www.ijar.org.in/
Volume-13, Issue-2(2), Apr-Jun-2026

हिंदी साहित्य में आर्थिक स्वतंत्रता: एक विश्लेषण

डॉ. पालापर्ति कुमार राजु
सरकार जूनियर कॉलेज, राजोल, डॉ.बी.आएर. अंबेडकर, कोनसीमा जिला, आंध्रप्रदेश।

प्रस्तावना:

आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ केवल धन का संचय नहीं, बल्कि आर्थिक शोषण से मुक्ति, स्वावलंबन और आत्म सम्मान के साथ जीव' जीने का अधिकार है। हिंदी साहित्य सदैन से समाज का दर्पण रहा है, जिसने आर्थिक विषमताओं और शोषिन वर्ग के संघर्षों को वाणी दी है। साहित्यकारों ने आर्थिक दासता को मानवीय गरिमा के हनन के रुप मे रेखांकित किया है। यह शोध पत्र हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में आर्थिक स्वतंत्रता की अवधारण के विकास और वर्तमान दौर में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण करता है।

प्रेमचंद युग:

कृषक अर्थव्यवस्था और ऋ-जाल मुंशी प्रेमचंद का साहित्य भारतीय किसान की आर्थिक दुर्दशा का जीवंत दस्तवेद है। 'गोदान' का होरी केवल एक पात्र नहीं, बल्कि भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था का प्रतिनिधि है। विश्लेषण : प्रेमचंद ने 'गोदान', "कफन' और "पूस की रात" में जमींदारी व्यवस्था और महाजनी शोषण को उजागर किया। "गोदान"' में होरी की त्रासदी यह है कि वह मरते दम तक ऋ के दुष्चक्र से नहीं निकल पाता।

प्रेमचंद के शब्दों में :

"किसान का तो सारा जीवन ही एक प्रकार का संग्राम है। उस पर से यह लगान और सूद की मार, जो उसे कभी भी आर्थिक स्ट्रवतंत्रता की सांस नहीं लेने देती।"

निष्कर्ष:

प्रेमचंद ने स्पष्ट किया कि बिना कृषि सुधारों के आर्थिक स्वतंत्रता का स्वन्य अधूरा है।

स्वतंत्रता पूर्व: स्वदेशी, खादी और आर्थिक स्वावलंबन स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान साहित्य ने 'स्वदेशी' और "खादी" को आर्थिक स्वतंत्रता के प्रतीक के रुप में स्थापित किया। साहित्यकारों ने जनता में आत्मविश्वास जगाय कि आर्थि आत्मनिर्भरता ही राजनीतिक स्वतंत्रता का मुख्य आधार है।

मैथिलीशरण गुप्त:

उनकी 'भारत-भारती' ने राष्ट्रप्रेम के साथ-साथ आर्थिक चेतना को जागृत किया।

उध्दरण :

"हम कौन थे, क्या हो गए हैं और क्या हांगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर, यह समस्या सभी। ""
यह पंक्तियाँ आर्थिक स्वावलंबन की ओर बढने का आइ्ान हैं।

निराला की दृष्टि :

निराला की कविता "भिक्षुक' और "वह तोडती पत्थर" में श्रमिक वर्ग की आर्थिक मजबूरी का जो चित्रण है, वह व्यवस्था पर एक कडा प्रहार है। वे लिखते हैं- ""वह तोडती पत्थर, देखा उसे मैंन इलाहाबाद के पथ पर।"" यह कविता श्रमिक की आर्थिक विवशता और शोषण के प्रति पाठकों को संवेदनशील बनाती है।

स्वातंत्रयोत्तर हिंदी साहित्य और सामाजिक विषमता :

स्वतंत्रता के बाद "नई कविता' और "समकालीन' साहित्य ने विकास खोखलेपन को उजागर किया। "आर्थिक स्वतंत्रता" का स्वन्य तब एक अधूरा रहा जब तक गरीबी और बेरोजगारी बनी रही।

साहित्यिक दृष्टि :

नामवर सिंह ने "दूसरी परंपरा की खोज' में साहित्य द्वारा सत्ता और बाजार के गठजोड़ की आलोचना की बै। मुक्तिबोध और धूमिल जैसे कवियों ने मध्यवर्गीय आर्थिक जद्दोजहद को अपनी कविताओं का विषय बनाया। उनका साहित्य आर्थिक शोषण के खिलाफ एक वैचारिक प्रतिरोध है।

वैश्वीकरण, आत्मनिर्भरता और 2026 का परिप्रिक्ष्य :

आज के दौर में आर्थिक स्वतंत्रता का स्वरुप बदला है। डिजिडल क्रांति, वैथ्वीकरण और "आत्मनिर्भर भारत" का संकल्प नई दिशा दे रहा है। 2026 के परिप्रेक्ष्य में, सारित्य अब केवल दूख का वर्णन नही कर रहा, बल्कि युवाओं की उद्यमशीलता और तकनीकी कौशल को भी चित्रित कर रहा है।

आधुनिक दृष्टि :

आज का साहित्य आर्थिक स्वतंत्रता के लिए व्यक्ति की योग्यता और साहस पर बल दे रहा है। दिनकर की पंक्तियाँ आज के युवाओं के लिए अत्यंत प्रेरणादायी हैं- "स्वयं को जान ले जो, वही पहचान ले जो, विधाता की लिखी को, वही तो मान ले जो।"!

निष्कर्ष:

हिंदी साहित्य ने आर्थिक स्वतंत्रता के संघर्ष को एक मानवीय आंदोलन का स्वरुप दिया है। यह साहित्य निरंतर हमें यह याद दिलाता है कि जब तक समाज का अंतिम व्यक्ति आर्थिक रुप से स्वतंत्र नहीं होता, तब तक राष्ट्र की प्रगति अधूरी है। सारित्य और आर्थिक विकास का समन्वय ही एक समृद्ध समाज का निर्माण कर सकता है।